शुल्क १५ वर्ष
२१००/- रुपये

विज्ञप्ति

एक प्रति ८/- रुपये
वार्षिक २५०/- रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १९ : अंक ५ : नई दिल्ली : ५-११ मई २०१३

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण ३७ तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी आदि श्रमणी ४१, सर्व ७८, १० मई को वाव पधार रहे हैं। यहां १३ मई को अक्षय तृतीया के समायोजन के पश्चात १५ मई को पूज्यवर राजस्थान की ओर विहार करेंगे। १९ मई को परमाराध्य आचार्यप्रवर का ५२वां जन्म दिवस एवं २० मई को चतुर्थ पदाभिषेक दिवस मनाया जाएगा। इस अवसर पर आसपास और सुदूर क्षेत्रों के लोग बड़ी संख्या में उपस्थित होंगे, ऐसी संभावना है।

'आयरियं सरणं गच्छामि' विषय पर परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर का मंगल उद्बोधन

आर्हत वाङ्मय में कहा गया है--**णमो आयरियाणं।** नमस्कार महामंत्र के पांच पदों में मध्यस्थ आचार्य होते हैं। जब तीर्थंकर विद्यमान नहीं होते हैं, उस समय आचार्यों का अधिक महत्त्व हो जाता है। आचार्य तीर्थंकर के प्रतिनिधि माने गए हैं। धर्मशासन का एक बड़ा दायित्व उन पर होता है।

प्राचीनकाल में साधु संघ में सात पदों की व्यवस्था थी। सात पदों की उपस्थिति में मैं समझता हूं आचार्यों का दायित्व थोड़ा सीमित हो जाता है, क्योंकि कार्य विभाजित हो जाता है। तेरापंथ में सात पदों की व्यवस्था नहीं है। भैक्षव शासन में व्यवस्था की गई कि बस, एक आचार्य सातों पदों का दायित्व संभालेंगे। ऐसी स्थिति में आचार्यों का कार्य कितना विस्तृत हो जाता है।

आयरियं सरणं गच्छामि--यह आज का निर्धारित प्रवचन विषय है। मैं आचार्य की शरण में जाता हूं। शरण उसी की लेनी चाहिए जो शरण दे सकने में सक्षम हो। जो शरण न दे सके, उसकी शरण क्यों लें? भैक्षव शासन में आचार्य कितने दायित्व संभालते हैं। मैंने आचार्य भिक्षु को साक्षात् नहीं देखा। परमपूज्य डालगणी तक के आचार्यों को देखने वाला तो कोई भी साधु-साध्वी या श्रावक-श्राविका इस दुनिया में मेरी जानकारी में नहीं है। परमपूज्य कालूगणी को देख चुके कुछ व्यक्ति आज भी मिलते हैं, किन्तु उनकी संख्या बहुत कम है। परम पूज्य गुरुदेव तुलसी और परमपूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी को हमने और बहुत से लोगों ने देखा है। आचार्य तुलसी का आचार्यकाल प्रलंब रहा। इतना लंबा आचार्यकाल तेरापंथ के इतिहास में दस आचार्यों में अन्य किसी को भी प्राप्त नहीं हुआ। मैंने उनको देखा और कुछ अंतरंगता में जाकर देखा है। आचार्य महाप्रज्ञजी को तो और ज्यादा घनिष्ठता तथा अंतरंगता में जाकर देखा है। कितने-कितने कार्य वे करते थे।

मैं गुरुदेव तुलसी को सामने रखकर आचार्यों के संदर्भ में आपको कुछ बताना चाहूंगा। परमपूज्य गुरुदेव तुलसी के दायित्व संपादन की सूची को सामने रखकर कहूं तो उनका पहला काम था मार्गदर्शन देना। वे दूसरों को मार्गदर्शन देते थे। अपने शिष्यों को, भक्तों और अनुयायियों को पथदर्शन देना आचार्यों का काम है। गुरुदेव तुलसी ने तो कितनों को पथदर्शन दिया होगा। अपनी समस्या लेकर आए व्यक्ति को आचार्य समाधान बताने का प्रयास करते हैं, उसका मार्गदर्शन करते हैं। वे बताते हैं कि इस मार्ग से चलो तो तुम्हारा कल्याण होगा। जो रास्ता उत्पथ और भटकाव की ओर ले जाने वाला होता है, आचार्य उसके प्रति सचेत करते हैं।

आचार्यों का दूसरा काम है--सारणा-वारणा करना। अच्छे काम के लिए वे प्रोत्साहित करते हैं। शिष्य

को समुचित अवसर प्रदान करते हैं, उसके अच्छे कार्य की अनुमोदना करते हैं, उसे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं, यह सारणा है। गलत काम के लिए वर्जना करना, गलत दिशा में जाने से रोकने का प्रयास करना वारणा है। अपेक्षा लगे और उचित हो तो व्यक्तिगत रूप से वारणा कर दें और अपेक्षा हो तो भरी परिषद में उपालंभ के रूप में वारणा कर दें कि तुमने यह गलत काम किया, भविष्य में ऐसा मत करना। गुरुदेव तुलसी ने अपने शासनकाल में सारणा-वारणा के कितने ही उदाहरण प्रस्तुत किए। मैंने कुछ तो साक्षात् देखा और कुछ सुना। बीदासर का वह प्रसंग विश्रुत है, जब गुरुदेव तुलसी ने वारणा का प्रयोग किया था। इस प्रकार आचार्यों का दूसरा काम है सारणा-वारणा करना।

आचार्यों का तीसरा दायित्व है--प्रव्राजना यानी दीक्षा देना। यह भी आचार्यों का एक बड़ा काम है। गुरुदेव तुलसी ने कितनों-कितनों को साधु जीवन के लिए प्रेरित किया, सैकड़ों-सैकड़ों को साधु-साध्वी दीक्षा प्रदान की। पुराने समय में तो फिर भी काफी दीक्षाएं बाहर हो जाती थीं। गुरुदेव तुलसी के युग में भी मैंने देखा कि कुछ दीक्षाएं बाहर होती थीं। पर वर्तमान समय में या इन वर्षों में प्रायः दीक्षाएं आचार्यों के द्वारा संपन्न होती हैं। इस प्रकार प्रव्राजना आचार्यों का एक बड़ा दायित्व है।

आचार्य का चौथा दायित्व है--उत्तराधिकारी की खोज करना, उसका निर्माण करना और उसका मनोनयन करना। पहले तो खोज करना कि मेरे शिष्य समुदाय में उत्तराधिकारी बनने योग्य कौन है? हीरा हर जगह, हर किसी को नहीं मिलता। हीरे को तलाशना पड़ता है। कहा गया है--रत्न आदमी की खोज न करे, पर आदमी को कई बार रत्न की खोज करनी पड़ती है। आचार्यों को भी यह खोज करनी होती है कि मेरे समुदाय में वह रत्न कौन है, जिसे मैं उत्तराधिकार का महत्तर दायित्व सौंप कर निश्चिंत हो सकूं।

आचार्य का पांचवां दायित्व है--चतुर्मास और विहार का निर्धारण कर उस संदर्भ में निर्देश देना। यह भी आचार्यों के जिम्मे एक बड़ा काम है। चतुर्मासों की नियुक्ति पर ध्यान देना कि किस सिंघाड़े का चतुर्मास कहां कराना है? चतुर्मास के पूर्व भी कई बार विहार का निर्देश देना पड़ता है कि उधर विहार करो। चतुर्मास की परिसमाप्ति के बाद कौन सिंघाड़ा किधर विहार करे, इस पर ध्यान देना और उस संदर्भ में समुचित निर्देश देना। सारे सिंघाड़ों के चतुर्मासों की निर्धारणा पूरी हो जाए, तब उस वर्ष की निश्चिंतता होती है कि सारा काम हो गया। इस प्रकार चतुर्मास और विहार क्षेत्रों की निर्धारणा करना, यह भी आचार्यों का बड़ा दायित्व होता है। इसके साथ स्वयं के चतुर्मास और मर्यादा महोत्सव का निर्धारण कर विहार पथ की घोषणा करना भी इसी दायित्व के अन्तर्गत समाहित कहा जा सकता है।

आचार्यों का छठा दायित्व होता है व्यक्ति नियोजन। किस साधु या साध्वी को किस सिंघाड़े में देना, किसे अग्रणी बनाना--इन बातों पर ध्यान देना और उसका क्रियान्वयन करना, यह भी आचार्यों का दायित्व है। जत्तेण कन्नं व निवेसयन्ति--पिता अपनी पुत्री के बारे में सोचता है कि कैसे उसे अच्छा वर मिले और अच्छे घर में उसका विवाह करूं। इसी प्रकार आचार्य भी इस पर विचार करते हैं कि अपने इस शिष्य या शिष्या को किस साधु या साध्वी को सौंपूं, किस सिंघाड़े में दूं, जिससे इसका विकास हो सके। आचार्य का दायित्व इतने पर ही समाप्त नहीं हो जाता। व्यक्ति नियोजन के क्रम में अग्रणियों की नियुक्ति करना और अग्रणियों से भी बड़े की नियुक्ति, जैसे साध्वीप्रमुखा किसको बनाना, साध्वीप्रमुखा भविष्य में कौन हो सकेगी, इस पर भी यथावसर ध्यान देना, अपेक्षानुसार मंत्री मुनि किसको बनाना, मुख्यनियोजिका किसको बनाना और अपेक्षा हो तो मुख्यनियोजक किसको बनाना, बहुश्रुत परिषद में किसको नियुक्त करना--इन बातों पर भी चिंतन करना आचार्यों का दायित्व होता है। ऐसे अनेक दायित्वों का निर्वाह व्यक्ति नियोजन के संदर्भ में भैक्षव शासन में आचार्य को करना होता है।

आचार्य का सातवां दायित्व है प्रशिक्षण देना, दूसरों को ज्ञान देना, व्याख्यान देना। गुरुदेव तुलसी को मैंने देखा, वे प्रातःकालीन व्याख्यान तो प्रायः नियमित रूप से करते थे। रात्रिकालीन व्याख्यान भी वे अपेक्षानुसार देते थे, हालांकि बीच में कुछ विराम भी लिया होगा। विहार के दौरान भी गांवों और नगरों में व्याख्यान

देना आचार्यों का एक दायित्व होता है। जहां तक संभव हो सके, आचार्य को व्याख्यान देना चाहिए। कोई सक्षम युवाचार्य हो तो फिर भी मान लो कुछ निश्चिंतता रह सकती है, पर युवाचार्य नहीं है तो आचार्य को इस पर विशेष ध्यान देना चाहिए कि व्याख्यान का क्रम गुरुकुलवास में ठीक चले। कभी अन्य कार्यों में व्यस्तता के कारण आचार्य व्याख्यान न दे सकें तो उन्हें योग्य व्याख्यानदाता को भेजना चाहिए। इस प्रकार स्वयं व्याख्यान देना और कदाचित् अपेक्षा हो तो दूसरों से व्याख्यान दिलवाना आचार्य का दायित्व होता है। गुरुकुलवास में व्याख्यान देने वाला भी अच्छा और योग्य होना चाहिए, जो श्रोताओं को संतोष और आध्यात्मिक आनंद दे सके। इस प्रकार प्रवचनदान भी आचार्य का एक दायित्व है। इसके अतिरिक्त प्रशिक्षण के क्रम में कक्षाएं लगाना, शिष्यों के ज्ञान का विकास करना, आगम पढ़ाना, उसका संपादन करना, वाचना देना, ज्ञान गोष्ठियां आयोजित करना, तात्त्विक चर्चा करना--यह भी आचार्यों का काम है। गुरुदेव तुलसी को मैंने देखा, वे अक्सर तात्त्विक चर्चा करते, अध्यापन करते। आगम संपादन का काम उनके वाचनाप्रमुखत्व में होता था। आगम संपादन के क्रम में कई बार वे स्वयं अपना सान्निध्य प्रदान करते। इस प्रकार प्रशिक्षण के संदर्भ में यह दायित्व आचार्यों का होता है।

आचार्यों का आठवां दायित्व है प्रायश्चित्त देना। साधु-साध्वियां, समण-समणियां और श्रावक-श्राविकाएं प्रायश्चित्त की भावना से आएं तो उनके अतिचारों को सुनना, समझना या पढ़ना, फिर उसके अनुसार प्रायश्चित्त देना--यह भी आचार्यों का काम है। आचार्य डॉक्टर के समान होते हैं। जैसे रोगी डॉक्टर के पास आता है तो डॉक्टर निदान के लिए उसकी समुचित जांच करते हैं, उसके पश्चात उसकी चिकित्सा करते हैं या चिकित्सा के बारे में निर्णय लेते हैं। इसी तरह आचार्य भी चिकित्सक के समान होते हैं। वे अपने शिष्यों की बात सुनते अथवा पढ़ते हैं। क्या दोष लगा, क्या अतिचार हुआ, उसकी शुद्धि के लिए उन्हें क्या प्रायश्चित्त देना चाहिए, तप करने में अक्षम हैं तो क्या उनको जप देना चाहिए, कौन से माध्यम से उनके अतिचारों की शुद्धि हो सकेगी, यानी वे अध्यात्मिक स्वास्थ्य लाभ कर सकें, इस दृष्टि से आचार्य चिकित्सक के रूप में अपने शिष्यों को प्रायश्चित्तरूपी औषधि देते हैं, ताकि वे अतिचारमुक्त होकर शुद्ध हो सकें। इस दिशा में प्रयास करना भी आचार्यों का एक दायित्व है।

आचार्य का नवां दायित्व है--साधु-साध्वियों की रिपोर्ट को पढ़ना। चतुर्मास की समाप्ति के बाद गुरु सन्निधि में पहुंचे साधु-साध्वियों की वार्षिक रिपोर्ट पढ़ना, चतुर्मास में और शेषकाल में उन्होंने क्या-क्या किया, उनकी दिनचर्या कैसी रही, उसके आधार पर उनके द्वारा कृत कार्यों का आकलन करना भी आचार्यों का दायित्व होता है।

आचार्यों का दसवां दायित्व है--पृच्छा करना, पूछना, आने वाले साधु-साध्वियों के सिंघाड़ों को समय देना, एक-एक ग्रुप से बात करना। मैंने गुरुदेव तुलसी को देखा कि वे साध्वियों से दिन में प्रायः दोपहर में बात करते, उनसे पूछताछ करते और पश्चिम रात्रि में जप, माला आदि के क्रम के बाद संतों के सिंघाड़ों को बुलाकर उनसे पृच्छा किया करते थे। आचार्य महाप्रज्ञजी पश्चिम रात्रि में पृच्छा न कर पूर्व रात्रि में करते थे। किसी साधु-साध्वी को कोई काम सौंपा है तो वह काम हुआ या नहीं, इस बारे में यथासंभव पूछताछ करना भी आचार्यों का दायित्व है।

आचार्य का ग्यारहवां दायित्व है मंगलपाठ सुनाना। किसी दूसरे गांव में जाने से पूर्व प्रायः श्रावक-श्राविकाएं मंगलपाठ का श्रवण करते हैं। साधु-साध्वियां भी विहार करते समय मंगलपाठ सुनाने की प्रार्थना करते हैं। इस प्रकार बार-बार मंगलपाठ सुनाना भी आचार्यों का एक दायित्व है। आचार्य के मुख से सुने गए मंगलपाठ का कुछ विशेष महत्त्व भी होता है। गुरुदेव तुलसी को मैंने देखा, वे मंगलपाठ स्वयं सुनाते और कभी-कभी दूसरों से भी मंगलपाठ सुनवा देते। स्वास्थ्य आदि की अनुकूलता की स्थिति में मंगलपाठ सुनाना भी आचार्यों का दायित्व है। दर्शन-उपासना के बाद जाने वालों को, विशेष परिस्थिति में आने वालों को, किसी विशेष कार्य में प्रवृत्त होने से पहले और बीमार आदि को मंगलपाठ सुनाना भी आचार्यों का दायित्व होता है।

आचार्य का बारहवां दायित्व है--श्रावक समाज की संभाल करना। कोई व्यक्ति वृद्ध, रुग्ण, अक्षम है और आचार्य उसके गांव या नगर में पधारे हैं तो ऐसे अक्षम लोगों को अपेक्षानुसार चलाकर दर्शन देने जाना भी आचार्य का एक दायित्व है।

इतने सारे कार्य होते हुए भी शान्त रहना, तनावमुक्त रहना--यह भी आचार्यों का दायित्व है। व्यस्त होते हुए भी अस्तव्यस्त न होना, अपने आप में लीन रहना, अपनी साधना के प्रति यथोचित जागरूकता रखना एक बड़ी बात है। यह आचार्यों का तेरहवां दायित्व होता है। इतने दायित्वों का निर्वहन करने वाले आचार्य होते हैं। मैंने तो गुरुदेव तुलसी को सामने रखकर कई बातें बताने का प्रयास किया। गुरुदेव तुलसी का लंबा आचार्यकाल रहा और उनका अभ्यास भी गहरा था। सुदीर्घकाल से शासन का संचालन करते-करते उनका अभ्यास परिपक्व हो गया था और वे इन दायित्वों में अपना काफी समय नियोजित करते थे। छोटी उम्र से ही वे इस कार्य में लग गए थे। बाद में उन्हें महाप्रज्ञजी के रूप में युवाचार्य मिल गए, फिर भी मैंने देखा कि युवाचार्य के होते हुए भी गुरुदेव सक्रिय रहे। ऐसे आचार्यों के लिए 'आयरियं सरणं गच्छामि' कहा गया। प्रथम पद के प्रतिनिधि ऐसे आचार्यों की शरण में जाना बहुत सार्थक होता है।''

•

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण वाव की ओर

पुष्ट रहे सर्वधर्म सद्भाव और स्वधर्मनिष्ठा

२४ अप्रेल। रापर प्रवास का दूसरा दिन। परमपूज्य आचार्यप्रवर प्रातः रापर के श्रद्धालुओं के घरों में चरण स्पर्श हेतु पधारे। तेरापंथ समाज के सन्नह घरों सहित पूज्यवर ने लगभग सौ घरों का स्पर्श किया। आचार्यवर ने नागेन्द्राचार्य नगर (अयोध्यापुरी) नामक कालोनी में लगभग अस्सी घरों को अपनी चरणरज से पावन किया। इस कॉलोनी में रहने वाले प्रत्येक जैन परिवार की भावना को आचार्यवर ने परिपूर्ण किया। न केवल तेरापंथी, अपितु स्थानकवासी और मूर्तिपूजक जैन श्रद्धालु भी आचार्यवर का अनुग्रह प्राप्त कर आह्लादित थे। नागेन्द्राचार्य नगर में स्थित स्थानक में भी आचार्यवर का पदार्पण हुआ। वहां कुछ क्षण आसीन होकर पूज्यवर ने लोगों को पावन प्रेरणा प्रदान की। रापर का तेरापंथ भवन भी आचार्यवर के पदार्पण से पावन हुआ। आचार्यवर ने वहां विराजमान होकर 'हमारे भाग्य बड़े बलवान' गीत का संगान किया।

प्रातःकालीन कार्यक्रम का निर्धारित विषय था--'सर्वधर्म सद्भाव।' आचार्यवर से पूर्व महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने विषय की विशद विवेचना की।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'धर्म शब्द कर्त्तव्य, आत्मशुद्धि का साधन, सम्प्रदाय आदि अनेक अर्थों में प्रयुक्त होता है। 'सर्वधर्म सद्भाव' विषय में इसका प्रयोग सम्प्रदाय के अर्थ में हुआ है। विभिन्न धर्मों में अनेक समानताओं के भी दर्शन किए जा सकते हैं। भेदप्रधान दृष्टि हो तो भेद बहुत देखा जा सकता है और अभेदप्रधान दृष्टि से अभेद भी बहुत देखा जा सकता है। विभिन्न सम्प्रदायों में भेद के क्या सिद्धान्त हैं, उन्हें समझने का भी यथोचित प्रयास करना चाहिए। भेद को स्वीकार करते हुए भी सभी सम्प्रदायों के प्रति सद्भाव रहना चाहिए। सबकी अपनी-अपनी परंपरा, वेशभूषा, उपासना पद्धति है। उनमें दूसरों को आपत्ति क्यों हो? परस्पर द्वेष भावना नहीं रहनी चाहिए।

दो शब्द हैं--समभाव और सद्भाव। समभाव सबके प्रति होना कठिन होता है और न ही ऐसी अपेक्षा है। किन्तु सद्भाव सबके प्रति होना चाहिए। मैं तो यहां तक कहता हूं कि नास्तिक के प्रति भी सद्भाव रहना चाहिए। दुर्भाव किसी के प्रति नहीं, सद्भाव सबके प्रति होना चाहिए और विश्वास किसी योग्य का करना चाहिए।

भारत में अनेक धर्म-सम्प्रदाय हैं। गायों का रंग पृथक्-पृथक् हो सकता है, किन्तु दूध सबका सामान्यतया श्वेत होता है। उसी प्रकार सम्प्रदाय पृथक्-पृथक् हो सकते हैं, किन्तु अहिंसा, सत्य आदि धर्म को कौन नहीं मानता? इन वर्षों में अच्छा साम्प्रदायिक सद्भाव देखने को मिल रहा है। जैन सम्प्रदायों में भी परस्पर सद्भाव बढ़ा है, ऐसा प्रतीत हो रहा है। सर्वधर्म सद्भाव रहना चाहिए तो स्वधर्म के प्रति भी औचित्य के साथ निष्ठा रहनी चाहिए। अपने सम्प्रदाय की व्यवस्था का सम्मान करना व्यक्ति का कर्त्तव्य होता है। अपना घर छोड़ने की भूल नहीं करनी चाहिए। परस्पर कलह-झगड़ा, दंगा आदि नहीं करना चाहिए। जो कट्टरता हिंसा का रूप ले लेती है, वह वांछनीय नहीं होती। सर्वधर्म सम्प्रदाय की ओर बढ़ते-बढ़ते स्वधर्म के प्रति निष्ठाभाव को भी पुष्ट रखना चाहिए।'

पूज्य आचार्यवर ने चतुर्दशी के अवसर पर हाजरी का वाचन करते हुए साधु-साध्वियों को पावन संबोध प्रदान किया। मुनिवृन्द ने पंक्तिबद्ध और साध्वीवृन्द ने अपने स्थान पर खड़े होकर लेखपत्र का समुच्चारण किया। पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश मुनि दिनेशकुमारजी के उच्चारणशुद्धि की श्लाघा की। कार्यक्रम में साध्वी अर्चनाश्रीजी ने अपनी संसारपक्षीय ननिहाल भूमि में अपने आराध्य के स्वागत में भावाभिव्यक्ति दी। समणी रुचिप्रज्ञाजी ने गीत का संगान किया।

कार्यक्रम के दौरान आचार्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'मुझे जैसी जानकारी मिली थी, उसके अनुसार कल कार्यक्रम में मैंने रापर के स्व. खीमजीभाई प्रेमजी मेहता का 'श्रद्धानिष्ठ श्रावक' के रूप में उल्लेख किया था। किन्तु बाद में ज्ञात हुआ कि उन्हें वह संबोधन प्राप्त नहीं है। वे अच्छे श्रावक थे और चूंकि मेरे मुख से उनके लिए वह संबोधन प्रयुक्त हो गया तो आज मैं उन्हें **श्रद्धानिष्ठ श्रावक खीमजीभाई मेहता** के रूप में स्वीकार करता हूं। पूज्यवर के मुखारविन्द से अयाचित और अचिंतित घोषणा सुनकर खीमजीभाई के परिजन अत्यन्त आह्लादित थे तो जनता आचार्यवर की वचननिष्ठा को देखकर भावविभोर थी।

मध्याह्न में युवा संगोष्ठी का समायोजन हुआ। संभागियों को परमपूज्य आचार्यप्रवर से पावन पथदर्शन प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त मुनि दिनेशकुमारजी, मुनि कुमारश्रमणजी, समणी हिमप्रज्ञाजी के भी प्रासंगिक वक्तव्य हुए।

अपराह्न में स्थानकवासी अजरामर लीमड़ी सम्प्रदाय की साध्वी उज्ज्वलकुमारीजी की शिष्या साध्वी यशोमतीजी आदि तीन साध्वियां आचार्यवर की पावन सन्निधि में समुपस्थित हुईं। आचार्यवर ने उनसे विविध विषयों पर वार्तालाप करते हुए अपने बालमुनियों का परिचय कराया। पूज्यवर के निर्देश पर बालमुनियों ने साध्वियों के समक्ष आर्षवाणी का उच्चारण किया।

रात्रि में वर्धमान पाठशाला, मंगल जैन छहकोटि पाठशाला, पदमजीत कलापूर्ण जैन पाठशाला (मूर्तिपूजक संघ), श्री अयोध्यापुरी वर्धमान जैन पाठशाला एवं आठकोटि जैन पाठशाला के ज्ञानार्थियों ने अपनी रोचक प्रस्तुतियां दीं।

सौ से अधिक घरों में चरणस्पर्श

२५ अप्रेल। रापर प्रवास का तृतीय और अन्तिम दिन। परम पावन आचार्यवर ने प्रातः एकतानगर और रापर के अन्य स्थानों पर स्थित सौ से अधिक घरों में चरणस्पर्श किए। इनमें से एक भी घर तेरापंथ समाज का नहीं था, किन्तु अन्य जैन और जैनेतर घरों के लिए किया गया महातपस्वी आचार्यवर का यह परिश्रम उदारता और सद्भावना का जीवंत निदर्शन था। कोई भी प्रार्थी पूज्यवर की अनुग्रहवृष्टि से वंचित नहीं रहा। इस प्रकार पूज्यवर ने दो दिनों में सत्रह तेरापंथी घरों सहित लगभग सवा दो सौ घरों में चरणस्पर्श किए। पूज्यवर का यह पुरुषार्थ परमपूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी द्वारा अपने उत्तराधिकारी के लिए प्रयुक्त 'महाश्रमिक' संबोधन को स्मृति में ला रहा था।

पूज्य आचार्यप्रवर घरों में चरणस्पर्श करते हुए श्रीमती एन.पी.मेहता विद्यालय में पधारे। विद्यालय के संचालक एवं कच्छ जिला भाजपा प्रमुख श्री पंकजभाई मेहता ने आचार्यवर का स्वागत किया। पूज्यवर ने विद्यार्थियों को जीवन में सद्गुणों के विकास की प्रेरणा प्रदान करते हुए उन्हें नशामुक्ति का संकल्प करवाया। पूज्यप्रवर ने 'सुश्रूषा' नामक अस्पताल का अवलोकन किया। सुश्रूषा चेरिटेबल ट्रस्ट के प्रमुख न्यासी श्री वाडीलाल आर.सावला आदि ने आचार्यवर का स्वागत करते हुए अस्पताल के विषय में अवगति दी।

प्रातःकालीन कार्यक्रम का विषय था--'जागो और जगाओ।' आचार्यवर से पूर्व महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी और मंत्री मुनिश्री के निर्धारित विषय पर प्रेरक वक्तव्य हुए।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'एक नारा यदा-कदा श्रुतिगोचर होता है--जीओ और जीने दो। इस पर हम जरा विचार करें। जीना कोई बड़ी बात नहीं है। आदमी ही नहीं, कीड़े-मकोड़े और पेड़-पौधे भी जीवन जीते हैं। इसलिए जीना एक सामान्य बात है। जीवन जीने वाला भोगविलासयुक्त जीवन भी जी सकता है, इसमें कौन-सी बड़ी बात है? बड़ी बात है--जागृतियुक्त जीवन। 'जीने दो' का हार्द यदि यह है कि किसी के जीने में बाधा मत बनो तो यह अच्छी बात है। जीओ और जीने दो के साथ यदि संयमपूर्वक जीओ की बात जुड़ जाए तो उसमें विशिष्टता आ सकती है। वैसे इस घोष से अच्छा घोष यह हो सकता है--जागो और जगाओ। यदि स्वयं जाग गए और दूसरों को भी जगा दिया तो आत्मा कल्याण की दिशा में आगे बढ़ सकती है।

जागो और जगाओ का अर्थ है--संयमपूर्वक जीने का अभ्यास करना और दूसरों को संयम की प्रेरणा देना। व्यक्ति को वाणी-संयम का अभ्यास करना चाहिए। वाणी एक शक्ति है, इसलिए उसका दुरुपयोग नहीं करना चाहिए। जिसने वाणी-संयम का अभ्यास कर लिया, समझें कि उसके जीवन में जागने का एक आयाम आ गया। व्यक्ति को भोग और इन्द्रियों के संयम का अभ्यास करना चाहिए। जैन श्रावकाचार में स्वदार संतोष और स्वपति संतोष व्रत निर्दिष्ट है। यदि संयम का अभ्यास होता है तो बलात्कार जैसी घटनाओं को पनपने का अवसर ही क्यों मिलेगा? व्यक्ति असंयम के कारण ऐसा अमानवीय कृत्य कर लेता है। इसी प्रकार विचार संयम, शरीर संयम, खाद्य संयम आदि जागने के अनेक आयाम हैं। व्यक्ति स्वयं जागकर औरों को भी जगाने का प्रयास करे तो श्रेय का पथ प्रशस्त हो सकता है।'

पूज्यवर ने अपने प्रवचन के उपरान्त जनता को बालमुनियों से परिचित करवाया। बालमुनियों के प्रति आचार्यवर के वात्सल्य और स्नेह को देखकर जनता अभिभूत थी। बालमुनि ध्रुवकुमारजी ने गीत के द्वारा अभिभावकों से अपनी संतान पूज्यचरणों में अर्पित करने का आह्वान किया।

कार्यक्रम में श्री नरेश मेहता (जयपुर) ने २१-२३ अक्टूबर को अणुविभा द्वारा 'शान्ति एवं अहिंसा' विषय पर समायोज्य अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन के संदर्भ में अवगति दी। पूज्यवर ने प्रसंगवश कहा--'नरेशजी मेहता जयपुर के सक्रिय कार्यकर्ता हैं। प्रायः माह में एक बार दर्शन करते हैं। ये खूब आध्यात्मिक कार्य करते रहें।'

मध्याह्न में स्थानीय जैन समाज के प्रमुख व्यक्ति आचार्यवर के मंगल सान्निध्य में उपस्थित हुए। पूज्यवर ने उन्हें पावन संबोध प्रदान करते हुए तेरापंथ की मर्यादा-व्यवस्था आदि के संदर्भ में अवगति दी। मात्र सत्रह तेरापंथी घरों वाले रापर में त्रिदिवसीय प्रवास की व्यवस्थाओं में स्थानीय जैन समाज की उत्साहपूर्ण सक्रिय सहभागिता रही। पूज्यवर के रापर प्रवास में जैन एवं जैनेतर समाज के लोगों द्वारा व्यक्तिगत स्तर पर लगाए गए १२५ स्वागत द्वार संपूर्ण नगर को सज्जा प्रदान कर रहे थे। पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार यहां एक दिन का प्रवास निश्चित था, किन्तु करुणानिधान आचार्यवर ने अनुग्रहवृष्टि करते हुए यहां तीन दिनों का प्रवास ही नहीं किया, अपितु महावीर जयंती का आयोजन प्रदान कर कच्छवासियों के लिए रापर प्रवास को चिरस्मरणीय बना दिया। आचार्यवर ने जैन समाज के स्थानीय लगभग सवा तीन सौ घरों में लगभग सवा दो सौ घरों को अपनी चरणरज से पावन किया। तेरापंथी परिवारों को पूज्यवर की निकट उपासना

का अवसर भी प्राप्त हुआ। श्रद्धालुओं ने इस दौरान विविध संकल्प स्वीकार किए। पूज्यवर का यह त्रिदिवसीय प्रवास धर्मसंघ की अतिशय प्रभावना करने वाला रहा। स्थानीय जैन एवं जैनेतर लोग मुक्तकंठ से तेरापंथ धर्मसंघ और पूज्यवर का यशोगान कर रहे थे। हर तेरापंथी को इससे सात्विक गर्व की अनुभूति होती है।

सेलारी में पावन पदार्पण

२६ अप्रेल। परम पावन आचार्यप्रवर ने त्रिदिवसीय प्रवास के उपरान्त आज प्रातः रापर से सेलारी के लिए विहार किया। मार्ग में राम मंदिर के पुजारी प्रभुदासजी अपनी कुटिया के बाहर आए और वहां रखी कुर्सी पर विराजने की आचार्यवर से करबद्ध प्रार्थना की। आचार्यवर उनकी कुटिया में पधारे और पुजारीजी को बीड़ी छोड़ने की प्रेरणा प्रदान की। प्रभुदासजी ने आचार्यवर द्वारा प्रदत्त प्रेरणा को अंगीकार करते हुए तत्काल बीड़ी का परित्याग कर दिया।

११ किमी. का विहार कर आचार्यप्रवर सेलारी पधारे। अपनी पैतृक भूमि पर आचार्यवर का पावन पदार्पण स्थानीय प्रवासी तेरापंथी परिवारों को अतिशय आह्लाद की अनुभूति कराने वाला था। पूज्यवर का प्रवास यहां श्री संदीपनि विद्या मंदिर में रहा।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में निधि कुबड़िया, चेतना मोरबिया, अलका मेहता, कल्पना मेहता, धर्मेश दोशी, अनोपचन्दभाई मोराबिया एवं श्रीमती रंजनाबेन दोशी ने अपने श्रद्धासिक्त उद्‌गार व्यक्त किए। रापर नगरपालिका प्रमुख श्रीमती जसवंतीबेन मेहता ने अपने पीहर में पूज्यवर के स्वागत में भावाभिव्यक्ति दी। समणी रुचिप्रज्ञाजी ने अपनी जन्मभूमि में अपने आराध्य की अभ्यर्थना की।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'ज्ञान प्रकाशकर होता है। उसके द्वारा जीवन का पथ आलोकित होता है। अज्ञानी दूसरों का पथदर्शन कैसे कर सकता है? जिसके पास ज्ञान होता है, वह स्वयं सन्मार्ग पर चल सकता है और दूसरों को भी उस पर चलने हेतु प्रेरित कर सकता है। विद्यार्थियों को विद्यालय में कितने विषय पढ़ाए जाते हैं। यह लौकिक विद्या है और गृहस्थ जीवन में यह आवश्यक भी होती है। इसके साथ अलौकिक विद्या, अध्यात्मविद्या का भी ज्ञान मिल जाए तो जीवन का अच्छा निर्माण हो सकता है। जिस व्यक्ति में ज्ञान-पिपासा होती है, वह विकास कर सकता है। लौकिक विद्या का अपना महत्त्व है तो अलौकिक विद्या का भी अपना महत्त्व है। व्यक्ति को अध्यात्म विद्या को भी जानने-समझने का प्रयास करना चाहिए।' परमपूज्य आचार्यवर ने स्थानीय प्रवासी दोशी और कुबड़िया परिवार को पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए समणी रुचिप्रज्ञाजी को उनकी जन्मभूमि पर विकास करने की प्रेरणा प्रदान की।

स्वागत में उमड़ा फतेहगढ़

२७ अप्रेल। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर प्रातः सेलारी से १५.०७ किमी. का विहार कर फतेहगढ़ पधारे। विहार मार्ग से लगभग छह किमी. स्थित गेड़ी गांव के प्रवासी श्रद्धालुओं और ग्रामीणों ने विहार के मध्य आचार्यवर से आशीर्वाद प्राप्त किया। आचार्यवर के स्वागत में फतेहगढ़वासियों ने पलक पांवड़े बिछा दिए। मानों पूरा गांव आचार्यवर की अगवानी में उमड़ पड़ा। स्थानीय तेरापंथी प्रवासी परिवारों सहित फतेहगढ़ में निवास करने वाले तेरापंथी पटेल परिवार अपने गांव में आराध्य के दर्शन कर धन्यता की अनुभूति कर रहे थे। गांव में चारों ओर हर्षोल्लास का वातावरण था। ग्राम पंचायत समिति द्वारा स्वागत जुलूस के मध्य बस स्टैण्ड रोड को **'अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य तुलसी मार्ग'** के रूप में लोकार्पित किया गया। पूज्यप्रवर का द्विदिवसीय प्रवास स्थानीय तेरापंथ भवन में हुआ।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में महिलाओं एवं कन्याओं ने परिसंवाद के साथ स्वागत गीत का संगान किया। दीप्ति संघवी, अश्विन परिख, चिराग दोशी, मैत्री खंडोर, नरेन्द्रभाई संघवी, मोहनभाई संघवी, प्रतिभा मोरबिया ने आचार्यवर के स्वागत में अपने श्रद्धासिक्त उद्‌गार व्यक्त किए। फतेहगढ़-मुम्बई की महिलाओं ने गीत

के द्वारा आचार्यवर का अपने गांव में स्वागत किया। श्री करमसीभाई ने तेरापंथी पटेल परिवारों की ओर से पूज्यवर की अभिवंदना की। सुश्री आभा संघवी ने साध्वी मुक्तिश्रीजी द्वारा एवं सुश्री दृष्टि संघवी ने साध्वी मल्लिकाश्री द्वारा प्रेषित भावनाएं श्रीचरणों में प्रस्तुत कीं। मांडवी नगरपालिका के पूर्व अध्यक्ष श्री रसिकभाई दोशी ने अपनी जन्मभूमि में आचार्यवर का स्वागत किया। मुनि अनंतकुमारजी, समणी हिमप्रज्ञाजी, समणी रुचिप्रज्ञाजी, समणी क्षांतिप्रज्ञाजी, समणी निश्चयप्रज्ञाजी एवं समणी ख्यातिप्रज्ञाजी ने अपने संसारपक्षीय गांव में पूज्यवर का अभिनंदन किया। फतेहगढ़ से लगभग बाईस किमी. दूर स्थित बेला गांव की साध्वी हेमलताजी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'जो व्यक्ति सम्यक्दर्शनविहीन होता है, उसे सम्यक् ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता। जिसके पास सम्यक् ज्ञान नहीं होता, वह चारित्र को प्राप्त नहीं कर सकता। जिसके पास चारित्र नहीं होता, वह कर्मबंधन से मुक्त नहीं हो सकता और जो कर्मबंधन से मुक्त नहीं होता, वह निर्वाण को प्राप्त नहीं कर सकता। सम्यक्दर्शन और सम्यक्ज्ञान जीवन की बड़ी उपलब्धि होती है। मिथ्यात्व अंधकार के समान होता है। यह जीवन की बहुत बड़ी कमी होती है। जहां तत्त्वबोध करना होता है, वहां यथार्थदृष्टि अपेक्षित होती है। यथार्थ को जानने वाले, यथार्थ की अभिव्यक्ति करने वाले व यथार्थ पर चलने वाले लोग दुनिया के विशिष्ट व्यक्ति होते हैं। उन्हें विशेष उपलब्धि हो सकती है। यथार्थ मार्ग पर चलने से आत्मकल्याण तो होता ही है, व्यवहार में भी सफलता का पथ प्रशस्त बन सकता है। जो यथार्थ से दूर रहता है, वह एक बड़ी उपलब्धि से वंचित रह जाता है। मिथ्या आग्रह से व्यक्ति को दूर रहना चाहिए। दुराग्रह का दृष्टिकोण व्यक्ति को यथार्थ से दूर ले जाता है। व्यक्ति किसी ग्रंथ, पंथ और संत को माने, न माने, किन्तु यथार्थ के प्रति उसकी आस्था होनी चाहिए। सम्प्रदाय से ऊपर सचाई का स्थान रहना चाहिए। यथार्थ को जैसे-तैसे झुठलाने का प्रयास नहीं करना चाहिए।'

फतेहगढ़ समागमन के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'आज हम फतेहगढ़ आए हैं। मेरे मन में सात्त्विक भाव है कि तेरापंथ के सप्तमाचार्य महामना डालगणी की मुनि अवस्था की कर्मभूमि में आए हैं। उन्होंने अपनी मुनि अवस्था के दो चतुर्मास फतेहगढ़ में किए थे। बेला चतुर्मास कर वे लाडनूं की ओर विहार कर रहे थे, तभी जोधपुर के आसपास उन्हें सूचना मिली कि संघ के द्वारा उन्हें आचार्य के रूप में मनोनीत कर दिया गया है। उन्होंने मुनि अवस्था में तीन बार कच्छ की यात्रा की। परमपूज्य डालगणी की अपनी पुण्यवत्ता थी। उनमें विशिष्ट ज्ञानवत्ता और समझाने की शक्ति थी। फतेहगढ़ से संबद्ध कितने-कितने साधु-साध्वियां, समणियां धर्मसंघ में दीक्षित हैं। यह यहां का एक बड़ा अवदान है। मैं तो इस संदर्भ में फतेहगढ़ के प्रति साधुवाद की भावना व्यक्त करना चाहूंगा कि इसने बड़ा दान दिया है। यहां के संघवी, खंडोल, दोशी--मुख्यतया तीन तेरापंथी परिवार हैं। पटेल परिवार भी यहां रहते है, जो तेरापंथ से संपृक्त हैं। सब में धार्मिक जागरणा बनी रहे।'

ऐतिहासिक शिलापट्ट पर आपी देशना

२८ अप्रेल। प्रातः आचार्यप्रवर ने गांव के लगभग दस जैन परिवारों तथा तीस कणबी पटेल घरों का स्पर्श किया। गांव में १४० कणबी पटेल परिवारों में काफी परिवार तेरापंथ से संपृक्त रहे। अब भी कई परिवार नियमित सामायिक उपासना करते हैं। आचार्यवर उस 'आंजणा कणबी रो बास डालगणी रो चोरो' स्थान पर पधारे, जहां सप्तमाचार्य पूज्य डालगणी अपनी मुनि अवस्था में प्रवचन किया करते थे। कणबी पटेल परिवार से संबद्ध गोविन्दभाई, करमसीभाई ने जानकारी देते हुए कहा--'डालबापू ने इसी जगह चतुर्मास किए। इससे जुड़े छोटे से कमरे में प्रवास किया। उनके प्रवचन व रात्रिवास इस चौबारे में होते।' इसमें चार खुली खिड़कियों में बड़े शिलापट्ट लगे हुए हैं, जो अन्दर में लगभग तीन फीट और लगभग चार फीट ऊंचे हैं। पूज्य डालगणी दीवार से निकले काष्ठखण्ड पर चरण टिका कर उस शिलापट्ट पर विराज कर प्रवचन

करते। उसी शिलापट्ट पर विराजमान होकर आचार्यवर ने अपने संक्षिप्त उद्‌बोधन में कहा--'हमने डालगणी को नहीं देखा। कहते हैं इस शिलापट्ट पर विराजमान होकर डालमुनि प्रवचन करते। हम भी यहां बैठ गए। उनका कितना तेजस्वी व्याख्यान हुआ करता था। लगता है उनमें कोई शक्ति थी। हम डालगणी के चरणों में वंदना करते हैं।'

कच्छस्तरीय मंगलभावना समारोह

२८ अप्रेल। कच्छ यात्रा अब परिसंपन्नता की ओर। पुलिस स्टेशन परिसर में निर्मित अहिंसा समवसरण में कच्छस्तरीय मंगलभावना समारोह का आयोजन। कच्छ के विभिन्न क्षेत्रों के निवासी व मुम्बई-सूरत आदि क्षेत्रों के प्रवासी लोगों की उल्लेखनीय उपस्थिति। कार्यक्रम में सुश्री हेमलता पीपाड़ा व सोनल पीपाड़ा ने गुजराती गीत का संगान किया। रापर के विधायक श्री बाघजीभाई पटेल ने कच्छ की अहिंसा यात्रा को उल्लेखनीय बताते हुए आशा व्यक्त की--अहिंसा के भाव कच्छ की जनता में गहरे आत्मसात् होते रहेंगे।

कच्छ के विभिन्न क्षेत्रों की ओर से श्री वाडीलाल दोशी (मांडवी) श्री दीपक पारेख, श्री रमणीकभाई खंडोर (रापर), उपासक श्री नरेन्द्र मेहता, श्री जीतूभाई भाभेरा (कच्छ-मुम्बई), श्री कानजीभाई दोशी (फतेहगढ़), श्री चन्द्रकान्त संघवी (अंजार), श्री हनुमानमल भंसाली (गांधीधाम), श्री भोगीभाई मेहता अध्यक्ष-बागड़ बे चौबीसी) ने अपने विचार रखे। आचार्य महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति, कच्छ के पदाधिकारियों में संयोजक श्री बाबूलाल सिंघवी, सहसंयोजक श्री कीर्तिभाई संघवी, श्री अशोकभाई मेहता, श्री पारसमल खांटेड़, मंत्री श्री शान्तिलाल बागरेचा, सहमंत्री श्री वाडीलाल मेहता, भोजन व्यवस्था प्रभारी श्री धीरजभाई संघवी, कोषाध्यक्ष श्री नरेन्द्रभाई मेहता ने प्रवास के विभिन्न अनुभव प्रस्तुत करते हुए आचार्यवर की आगामी यात्रा की मंगलकामना की।

अपनी पैतृक भूमि की ओर से मुनि अनंतकुमारजी, फतेहगढ़ के पार्श्ववर्ती गांव गेड़ी से संबद्ध साध्वी जिज्ञासाप्रज्ञाजी ने अपने उद्‌गार व्यक्त किए। गांव से संबद्ध साध्वी मूलांजी के लिखित भावों को मुनि अनंतकुमारजी ने, साध्वी प्रभावतीजी के विचारों को श्री अशोक खंडोर, साध्वी विवेकश्रीजी के उद्‌गारों को जयश्री मेहता ने प्रस्तुति दी। आगम मनीषी मुनि महेन्द्रकुमारजी के लिखित विचारों को मुनि अभिजितकुमारजी ने प्रस्तुति दी।

मंत्री मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में कहा--'सूर्य को तो उदय होना होता है, पर पूर्व दिशा प्रणम्य हो जाती है। महापुरुष का तो अपने पुण्य व अतिशय के बल पर अभ्युदय होना ही होता है, पर उनसे संपृक्त जन भी प्रणम्य बन जाते हैं। महापुरुषों का कृतज्ञ भाव सबके लिए अनुकरणीय होता है। आचार्यवर की कच्छ यात्रा ऐतिहासिक व उपलब्धिपूर्ण रही।' मंत्री मुनिश्री ने कुछ कच्छी श्रावकों का उल्लेख करते हुए उनसे संबद्ध प्रसंगों को प्रस्तुति दी।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री ने अपने अभिभाषण में कहा--'महान संतों के चरणों में आने से शान्ति व आनंद प्राप्त होता है। सुख, शान्ति व आनंद देने के लिए वे स्वयं कष्ट सहन करते हैं। कच्छ यात्रा में आचार्यवर ने बहुत पुरुषार्थ किया है। श्रम करना तेरापंथ के आचार्यों की नियति है। आचार्यवर की यह कच्छ यात्रा निष्पत्तिदायक रही।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने 'भगवती अहिंसा' विषय पर मंगल प्रवचन करते हुए कहा--'अहिंसा ऐसी भगवती है, जो हर प्राणी के लिए कल्याणकारी है। भगवान शब्द पूज्य के अर्थ में प्रयुक्त है। अहिंसा तो अत्यन्त सम्माननीय तत्त्व है। जिस व्यक्ति के जीवन में अहिंसा आत्मसात् है, वह व्यक्ति भी सम्मान्य हो जाता है। धर्म का सार है अहिंसा। अभय, मैत्री, अनुकंपा, आध्यात्मिक दृष्टि से सहयोग की भावना, दुःख दूर करने की भावना, सुख देने की भावना--यह सब भगवती अहिंसा के पारिवारिक सदस्य हैं। आत्मा ही

अहिंसा है और वही हिंसा भी है। भाव ही अहिंसा और भाव ही हिंसा है। कर्म का बंधन और मोक्ष का आधार भी भाव ही है। जहां राग व प्रमाद की स्थिति बनती है, वहां हिंसा हो सकती है।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'अहिंसा को पुष्ट करने के लिए अनुकंपा की चेतना का विकास आवश्यक है। दयावान हिंसा से बचता है। जिसके घट में दया है, उसके अहिंसा की भूमिका प्रशस्त है। निर्दय के हिंसा की संभावना अधिक रहती है। किसी को गाली देना, डांटना, झिड़कना कौन-सा बड़ा काम है? अहिंसा से व्यवस्था कैसे सुचारु रूप से चला सकें, यह देखना है।'

सप्तमाचार्य डालगणी की स्मृति करते हुए आचार्यवर ने कहा--'डालगणी तेरापंथ धर्मसंघ के गण सम्राट थे। वे इस दृष्टि से विलक्षण थे कि उनका मनोनयन पूर्ववर्ती आचार्य ने नहीं, अपितु संघ या मुनि कालूजी स्वामी (रेलमगरा) ने किया था। वैसे ऐसा मौका कभी आए नहीं। उस समय ऐसी स्थिति आ गई थी। उस समस्या का समाधान करने के लिए मुनि कालूजी स्वामी व संघ के तत्कालीन सदस्यों का आभार मानना चाहिए। डालगणी मुनि अवस्था में कच्छ क्षेत्र में तीन बार पधारे। कच्छ के छोटे से क्षेत्र बेला में तीन व फतेहगढ़ में दो--इस तरह पांच चतुर्मास किए। उनकी अपनी अनुशासनशैली थी। इस संदर्भ में वे थोड़े कठोर थे।'

कच्छ यात्रा के संदर्भ में महाश्रमिक आचार्यवर ने कहा--'कच्छ यात्रा करने या न करने के संदर्भ में २ जून २०१२ को पारलू में समीक्षा परिषद की मीटिंग में मैंने साधु-साध्वियों के साथ विमर्श किया था। कई तरह के विचार आए। जसोल चतुर्मास प्रवेश के दिन कच्छ के लोग आए। उस दिन मैंने कच्छ की यात्रा करना स्वीकार किया। वाव यात्रा का निर्णय तो मैंने केलवा में ही कर लिया था। हमारे जितनी अनुकूलता थी, उतना विचरण किया। हमने बहुत ज्यादा समय तो नहीं दिया, पर कई क्षेत्रों, जैसे गांधीधाम, रापर व वाव क्षेत्रों के प्रवास में वृद्धि की। साध्वीप्रमुखाजी, मंत्री मुनिश्री व मुख्यनियोजिकाजी को यात्रा में साथ ले लिया। बहुत वर्षों से यहां साधु-साध्वियां आते रहते हैं। सबने अपने-अपने ढंग से यहां काम किया है। पहले यहां आनेवाले के लिए कहा जाता था--कालापानी मिला है, पर अभी तो कालापानी जैसी बात लग नहीं रही है। तेरापंथ समाज में ही नहीं, पूरे जैन समाज में अच्छा माहौल देखने को मिला। अब तो कालापानी की जगह ठंडा-मीठा पानी लगा।'

कच्छ से संबद्ध साधु-साध्वियों का उल्लेख करते हुए आचार्यवर ने कहा--'मुनि तेजमालजी को पूज्य डालगणी ने अपनी मुनि अवस्था में दीक्षित किया था। पुराने समय के वे संघनिष्ठ मुनि थे। मैं उन्हें सद्भावना, सम्मान व वंदना की भावना के साथ स्मरण करता हूं। उनकी दूसरी पीढ़ी में साध्वी प्रभावतीजी व तीसरी पीढ़ी में समणी हिमप्रज्ञा है। साध्वी प्रभावतीजी अभी श्रीडूंगरगढ़ सेवाकेन्द्र में हैं। समणी हिमप्रज्ञा को संस्कृत का अच्छा अध्ययन है। व्याकरण पर साधनिका तैयार की है। लाडनूं में संस्कृत का अध्यापन भी कराया है। वह अपने ज्ञान का अच्छा विकास करती रहे। इसी भूमि से मुनि लीलाधरजी जुड़े थे। कहते हैं, उन्हें सात सूत्र कंठस्थ थे। एक पांव पर खड़े रहकर स्वाध्याय करते। वे पूज्य डालमुनि से दीक्षित थे। बाद में वे संघ से पृथक् हो गए। संघ में वे जब तक थे, उस अवस्था की उनकी संघसेवा व ज्ञानवत्ता को हम याद करते हैं। मुनि अनंत यहां से जुड़ा है। यह तो कई जगह--भुज, रापर, फतेहगढ़ आदि से भी संबद्ध है। हमने इसे यात्रा से छोड़ते-छोड़ते साथ ले लिया। एक बार मंत्री मुनिश्री के नहीं आने का तय हुआ, उस समय मेरा मन हुआ कि इनको यात्रा में साथ लेना चाहिए। इसको मंत्री मुनिश्री का सामीप्य प्राप्त है। कच्छ के क्षेत्रों में परिभ्रमण के दौरान ये साथ रहते। इनके संसारपक्षीय परिवार से तीन सगी बहने हैं। साध्वी मुक्तिश्रीजी जो साध्वी त्रिशलाकुमारीजी के साथ दिल्ली आ रही है। साध्वी मल्लिकाश्री को अस्वस्थ होने के कारण साथ में नहीं ला पाए। समणी रुचिप्रज्ञा अभी साथ है। मुनि अनंत अपनी साधना व ज्ञान का विकास करता रहे। मुनि सिद्धार्थकुमार भी यहां से जुड़ा हुआ है। मैंने देखा कि वह स्वभाव से शान्त है। साध्वी मूलांजी साध्वी पानकंवरजी 'द्वितीय' के साथ लूणकरणसर में हैं। वे चित्तसमाधि में रहें। आगम स्वाध्याय करती हुई

आत्मनैर्मल्य को बढ़ाएं। साध्वी विवेकश्रीजी साध्वी चांदकुमारीजी (लाडनूं) के साथ है। उनकी यह भावना थी--साध्वी सुषमाकुमारीजी के साथ मैं भी चलूं। हमने उनको वहीं छोड़ दिया। वे साध्वी मनसुखांजी से फतेहगढ़ में दीक्षित है।' आचार्यवर ने यहां से संबद्ध साध्वी मंगलयशाजी, साध्वी गौरवयशाजी, समणी हिमप्रज्ञा, समणी क्षांतिप्रज्ञा, समणी ख्यातिप्रज्ञा, समणी निश्चयप्रज्ञा का नामोल्लेख किया। बेला से संबद्ध साध्वी हेमलताजी के संदर्भ में कहा--'हमने इनको पचपदरा में रखा। थोड़ा अभ्यास करा दिया। अर्चनाश्री इनकी संसारपक्षीया भतीजी है। समणी जिज्ञासाप्रज्ञा, समणी करुणाप्रज्ञा भी अपना विकास करें।' कच्छ में अलग-अलग समय में संपन्न तीन प्रभावक संथारों का भी आचार्यवर ने उल्लेख किया।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने संतोष प्रकट करते हुए कहा--'पूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी की वाणी मेरे माध्यम से पूरी हो रही है। अब मैं निर्भार हो रहा हूं। अब मैं यात्रा में कितनी ही दूर जाऊ, कच्छ स्पर्श व विचरण की बात अवशेष नहीं रहेगी। अब कच्छ के बाद वाव सामने है।' कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

फतेहगढ़ के दोदिवसीय प्रवास में मुम्बई, सूरत, भुज, गांधीधाम, अंजार आदि क्षेत्रों में प्रवासी संघवी, खंडोर व दोशी परिवारों के अधिकांश लोग यहां पहुंचे और उपासना का पूरा लाभ लिया। अभी उनमें से एक भी परिवार यहां नहीं रहता। मात्र पुराने समय में तेरापंथी बने कणबी पटेलों के तीस व दो दर्जी परिवार हैं। आचार्यवर के प्रवास से पूरे गांव में उमंग व उत्साह का माहौल रहा। प्रायः सभी वर्गों के लोगों ने पूज्यवर के प्रवचन का लाभ उठाया। रात्रि में भी प्रवचन के कार्यक्रम चले।

निर्भीक व निष्पक्ष न्यायकर्ता है मृत्यु

२६ अप्रेल। प्रातः लगभग बारह किमी. का विहार कर आचार्यप्रवर मोडा पधारे। यहां आपका प्रवास प्राथमिक शाला में हुआ। गांव के प्रवासी जैन बड़ी संख्या में आचार्यप्रवर की अगवानी में पहुंचे। विद्यालय परिसर में आयोजित कार्यक्रम में श्री धरमसीभाई पटेल, प्राचार्य श्री प्रकाशभाई पटेल, श्री जयंतीभाई चौधरी, श्री विजय मेहता, भावित मेहता, परम मेहता आदि ने अपने विचार रखे। जैन समाज की बहनों ने गीत का संगान किया। अपने ननिहाल पक्ष की ओर से समणी रुचिप्रज्ञाजी ने अपने विचार रखे। मंत्री मुनिश्री का प्रेरक वक्तव्य हुआ।

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'व्यक्ति को धन से त्राण नहीं मिलता। धनवान अच्छे बंगले में रह सकता है, अच्छी गाड़ी में सफर कर सकता है व अच्छा सुविधापूर्ण जीवन जी सकता है, लेकिन धनवान क्या मृत्यु से छुटकारा पा सकता है ? दुनिया का सबसे बड़ा न्यायकर्ता है मृत्यु। उसको कितनी ही रिश्वत दे दो, चाहे उसे साम्राज्य ही भेंट में क्यों न दे दो, वह भय और प्रलोभन से मुक्त रहकर हर उस प्राणी को उठा लेती है, जिसे उठाना होता है। उसे किसी भी प्रकार के अस्त्र-शस्त्र की परवाह नहीं। मृत्यु निर्भीक व निष्पक्ष न्यायकर्ता है।'

आचार्यप्रवर ने आगे कहा--'भारतीय संस्कृति में दान की बहुत महिमा वर्णित है। शुद्ध साधु को दान देना बहुत महत्त्वपूर्ण दान है। भिक्षा भावना से दी जाती है। साधु को देने से धर्म होता है। दान देने वाले में नाम व ख्याति की भावना न हो। उसके पीछे विशुद्ध धार्मिक दृष्टि हो। कुछ दानदाता ऐसे होते हैं, जो दान भी देते हैं और नाम की भावना भी रखते हैं। कुछ दानदाताओं के मन में नाम की भावना नगण्य-सी होती है। दुनिया में परस्पर सहयोग से काम चलता है।' आचार्यवर ने इस प्रसंग में अहिंसा यात्रा के उद्देश्यों की चर्चा की। मोडा आगमन के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'यहां से जुड़े कई जैन परिवार आए हैं। आज प्रवचन में स्थानीय जनता विशेष रूप से उपस्थित है। पूरे गांव में धर्म की भावना बनी रहे।'

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/12-14 Fri.-Sat.
Date of Publication : 04-05-2013 L.No.-U (C) 200/2012-2014
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

श्री भीखमचन्द नखत अणुव्रत शिक्षक संसद के पुनः अध्यक्ष निर्वाचित

श्री भीखमचन्द नखत (टमकोर-हैदराबाद) का राष्ट्रीय अणुव्रत शिक्षक संसद संस्थान का दूसरी बार अध्यक्ष के रूप में सर्वसम्मति से निर्वाचन हुआ है। श्री नखत ने राष्ट्रीय कार्यसमिति के सदस्यों की घोषणा की। संस्था के पदाधिकारियों के नाम इस प्रकार हैं--कार्यकारी अध्यक्ष श्री सोहनलाल धाकड़ (मुम्बई), उपाध्यक्ष श्री मिलापचन्द बोथरा (दिल्ली), श्री उत्तमचन्द पगारिया (कोल्हापुर), मंत्री श्री धर्मचन्द जैन 'अनजाना' (थामला), सहमंत्री श्री चन्द्रशेखर देराश्री (राजसमन्द), कोषाध्यक्ष श्री महेशभाई नेनावटी (सूरत), विशिष्ट मार्गदर्शक डा. हीरालाल श्रीमाली।

श्रेणी आरोहण का आदेश

परमपूज्य आचार्यप्रवर ने २३ जून को जोधपुर में समायोज्य दीक्षा समारोह के लिए समणी गौरवप्रज्ञाजी को श्रेणी आरोहण (साध्वी दीक्षा) का आदेश प्रदान किया है। उल्लेखनीय है--इसी समारोह हेतु मुमुक्षु रीना (जोधपुर) की साध्वी दीक्षा पूर्व घोषित है।

आदर्श साहित्य संघ को भेंट

५१००/- शासनसेवी स्व. श्री उत्तमचन्दजी सेठिया (मोमासर-जयपुर) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र व पुत्रवधू आनंदीलाल-सुमन, निरंजन-उर्मिला, विनोद-प्रभा, मनोज-सुनीता, सुपौत्र नितेश, श्रेयांस, अंकुश, प्रशान्त व प्रपौत्र प्रत्यूष सेठिया द्वारा प्रदत्त।

३१००/-स्व. श्रीमती कलकत्तीदेवी लुनिया (पुत्रवधू-श्रद्धानिष्ठ श्रावक स्व. सरदारमलजी लुनिया, धर्मपत्नी-स्व. पूनमचन्दजी लुनिया, तारानगर-कोलकाता) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र व पुत्रवधू रवि-कान्ता, रणजीत-ममता, संजय-रजनी, कुलदीप-अनुभा, सुपौत्र व सुपौत्री अभिलाषा, अंकित, प्रियंका, पूजा, राशि, प्रेक्षा, आदित्य, सृष्टि व समस्त लूनिया परिवार द्वारा प्रदत्त।

३१००/-स्व. श्रीमती परतूदेवी बोथरा (धर्मपत्नी-स्व. श्री सोहनलालजी बोथरा, श्रीडूंगरगढ़-अहमदाबाद) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र व पुत्रवधू ठाकरमल-इचुदेवी, घमंडीराम-जतनदेवी, छतरसिंह-शोभादेवी, निर्मलकुमार-उर्मिलादेवी, सुपौत्र राजेन्द्र, सुरेन्द्र, पंकज, नीरज, अमित, सुमित बोथरा द्वारा प्रदत्त।

अनशन में दीक्षा

२ मई। परम पावन आचार्यप्रवर के निर्देशानुसार साध्वी मधुस्मिताजी ने बीदासर में अनशनरत श्राविका सोहनीदेवी (धर्मपत्नी-श्री डालमचन्दजी बैद) को साध्वी दीक्षा प्रदान की है। नवदीक्षित साध्वी का नाम साध्वी शोभनाश्री रखा गया है। समाचार लिखे जाने तक साध्वीश्री का अनशन उत्तरोत्तर प्रवर्द्धमान है।

पत्र व्यवहार के लिए हमारा पता--

केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक-आदर्श साहित्य संघ, द्वारा-आचार्य महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति, तेरापंथ भवन, पो. वाव-३८५ ५७५, जि. बनासकांठा (गुजरात)

मोबाइल नं. ०७६९८६५०४१० (गुजरात प्रवास में), ०६३५२४०४६४१

दिल्ली कार्यालय का फोन ०११-२३२३४६४१ Email : adarshsahityasangh@yahoo.com

●

आदर्श साहित्य संघ, २१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ के लिए बच्छराज कठौतिया ट्रस्टी द्वारा प्रकाशित तथा पवन प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२ से मुद्रित। सम्पादक : **केशवप्रसाद चतुर्वेदी।**